Toppersnotes
Unleash the topper in you

RPSC

असिस्टेंट प्रोफेसर

भूगोल

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 9

शोध विधि तंत्र एवं प्रादेशिक नियोजन

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	शोध विधि तंत्र	**1**
2.	शोध समस्या की पहचान	**8**
3.	शोध उपागम	**12**
4.	अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन	**15**
5.	आंकड़ो का संग्रहण (प्रश्नावली एवं अनुसूची)	**21**
6.	द्वि चर एवं बहुचर विश्लेषण	**30**
7.	आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या	**37**
8.	शोध प्ररचना	**41**
9.	साहित्यिक चोरी	**47**
10.	अनुसंधान विधियाँ एवं अनुसंधान कार्यप्रणाली/क्रियाविधि	**52**
11.	शोध नैतिकता	**56**
12.	प्रादेशिक अवधारणा	**61**
13.	मात्रात्मक एवं गुणात्मक शोध	**68**
14.	संदर्भों का उदाहरण	**73**
15.	प्रदेशों का सीमांकन	**80**
16.	प्रादेशिक नियोजन की संकल्पना	**84**
17.	प्रादेशिक पदानुक्रम	**89**
18.	प्रादेशिक नियोजन की संकल्पनातमक एवं सैद्धांतिक रूपरेखा	**92**
19.	विकास की संकल्पना	**98**
20.	प्रादेशिक असमानताएँ	**101**
21.	प्रादेशिक विकास के सिद्धांत/ मॉडल	**104**
22.	भारत के सन्दर्भ में प्रादेशिक नियोजन	**113**

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1 अध्याय

शोध विधि तंत्र

शोध / अनुसंधान का अर्थ, प्रकार व महत्व
(Research :- Meaning, Types and significance)

शोध या Research शब्द Re + Search से बना है। जिसका अर्थ है :— पुन: खोजना या बार - बार खोजना।

शोध द्वारा एक निश्चित समस्या का वस्तुपरक एवं क्रमबद्ध तरीके से हल खोजने का प्रयत्न किया जाता है।
अर्थात् व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक तरीके से ज्ञान की खोज करना अनुसंधान है।

परिभाषाएँ :—

रेउमन व मोरी के अनुसार — "नवीन ज्ञान प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयास को शोध करते हैं।"

मनरो के अनुसार — "अनुसंधान समस्याओं को सुलझाने की वह विधि है जिसमें सुझावों की पुष्टि तथ्यों द्वारा की जाती है।"

जोन वेस्ट के अनुसार — "अनुसंधान ऐसी व्यवस्थित प्रक्रिया है जो नई खोज करती है तथा संकलित व सुसंगठित ज्ञान का विकास करती है।"

Toppersnotes
Unleash the topper in you

क्रोफॉउ के अनुसार — "अनुसंधान किसी समस्या के उचित समाधान के लिए क्रमबद्ध तथा विशुद्ध चिन्तन एवं विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग की विधि है।"

शोध के चरण (Steps of Research)

(1.) समस्या का चयन (Selection of Problem)
(2.) परिकल्पना निर्माण (Hypothesis)
(3.) शोध रूपरेखा (Research framwork)
(4) शोध साहित्य का पुनरावलोकन (Literature Review)
(5.) प्रारम्भिक भौगोलिक ज्ञान व आंकड़ो का संकलन (Primary Geographical knowledge and collection of data)
(6.) आंकड़ो का विश्लेषण, मानचित्रण व लेखन (Data Analysis, Mapping and writing)
(7.) सामान्यीकरण तथा निष्कर्षों व सुझावों का प्रतिपादन (Generalization and Presentation of Result and suggestion)

शोध की प्रमुख विशेषताएँ / गुण —

(1) वैधता (Validity)
(2.) विश्वसनीयता (Reliability)
(3) सटीकता (Accuracy)
(4.) प्रयोग सिद्ध प्रवृति (Empirical Nature)
(5.) व्यवस्थित (Systematic)
(6.) सामान्यीकरण (Generalization)

शोध के प्रकार (Types of Research)

शोध के मुख्यत: दो प्रकार होते हैं :-

आधारभूत शोध एवं व्यावहारिक शोध। परन्तु वर्तमान समय में व्यावहारिक तरह की शोध का ही एक नया प्रकार देखने को मिलता है जिसे क्रियात्मक शोध कहा जाता है।

[1.] मौलिक / आधारभूत शोध (Fundamental Research) —

ऐसे शोध जिसके निष्कर्षों द्वारा किसी विशेष वैज्ञानिक नियमों का प्रतिपादन होता हो, उन्हें आधारभूत शोध कहा जाता है।

इसमें किसी विशेष घटना तथ्य या समस्याओं के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

इसका उद्देश्य विभिन्न घटनाओं के बीच प्रकार्यात्मक संबंधो को पहचानना होता है।

यह उन स्वभाविक नियमों को ढूढ़ता है जिनके द्वारा कोई भी घटना घटित होती है।

कोई भी घटना चाहे प्राकृतिक हो या सामाजिक हो वह स्वत: घटित नहीं होती है, बल्कि कुछ नियमों से संचालित व नियंत्रित होती है। अत: मूलभूत अनुसंधान का उद्देश्य प्रयोगो व संबंधो के आधार पर इन नियमों या वैज्ञानिक अवधारणाओं का निर्माण करना होता है।

(2) व्यावहारिक शोध (Applied Research) – (अनुप्रयुक्त शोध)

ऐसे शोध जिनसे किसी सामाजिक समस्या विशेष का समाधान हो, उन्हें अनुप्रयुक्त शोध कहा जाता है।

इस प्रकार के शोध भावी विकास की योजनाएँ बनाने में सहायक होते हैं

यह एक दिशा निर्देश शोध है जिससे आगामी कार्य व रणनीतियाँ प्रभावित होती है।

इस प्रकार के शोध से समाज को व्यावहारिक लाभ प्राप्त होते है।

(3.) क्रियात्मक शोध (Action Research) –

वह शोध जो किसी घटना या समस्या के क्रियात्मक पक्ष की ओर अपने ध्यान को केन्द्रीत करता है एवं अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों को सामाजिक परिवर्तन के संबंध में भविष्य की योजनाओं से संबंधित करता है।

शोध का यह प्रकार 1944 में कुर्ट लेविन द्वारा विकसित किया गया था।

क्रियात्मक अनुसंधान तथा अनुप्रयुक्त अनुसंधान में समानता दिखाई देती है, परन्तु अनुप्रयुक्त शोध का उद्देश्य सामाजिक समस्याओं के वैज्ञानिक पक्ष को प्रस्तुत करना है। जबकि क्रियात्मक अनुसंधान भविष्य की योजनाओं एवं सुधार पर केन्द्रीत रहता है।

Unleash the topper in you

नेशनल सांइस फाउण्डेशन के अनुसार 3 प्रकार के शोध बताये है :-

(1) मूलभूत शोध
(2) व्यावहारिक शोध
(3.) प्रयोगात्मक शोध

एडवर्ड व क्रॉनबेक का वर्गीकरण

(1.) सर्वेक्षण शोध (Survey Research)
(2.) प्राविधिक शोध (Technological Research)
(3.) व्यावहारिक शोध (Applied Research)
(4.) आलोचनात्मक शोध (Critical Research)

शोध के उपागम के आधार पर कुछ अन्य प्रकार –

(1.) वर्णनात्मक शोध (Descriptive Research) – तथ्यों व आंकड़ो के वर्णन के आधार पर किसी घटना का अध्ययन करना।

(2.) विश्लेषणात्मक शोध (Analytical Research) – पूर्व में किये गये शोध कार्यों का विश्लेषण करना।

(3.) संकल्पनात्मक शोध (Conceptual Research) – आंकड़ो के विश्लेषण से किसी नई संकल्पना का विकास करना या पूर्व में दी गई संकल्पनाओं से नई संकल्पना का विकास करना।

(4.) व्याख्यात्मक शोध (Explanatory Research) – पूर्व में प्रतिपादित विचारों एवं संकल्पनाओ की व्याख्या करना। यह विभिन्न शोधो के प्रति आलोचनात्मक, पुनरावलोकन प्रस्तुत करता है।

(5.) आनुभविक शोध (Empirical Research) – अनुभव व अवलोकन के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है।

(6.) ऐतिहासिक शोध (Historical Research) – इसमें विभिन्न ऐतिहासिक स्त्रोतो का प्रयोग किया जाता है।

(7.) मात्रात्मक शोध (Quantitative Research) – संख्या या माप के आधार पर परिणामों को देखा जाता है।

(8) गुणात्मक शोध (Qualititative Research) – गुणो या विशेषताओं के संदर्भ में परिणामों को देखा जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

शोध का महत्व
(Significance of Research)

शोध के कारण किसी तथ्य या विषय के संबंध में अज्ञानता की स्थिति होती है उसका निराकरण होता है तथा उस स्थान विशेष के लोगो के साथ - साथ सम्पूर्ण विश्व के लोगो के लिए यह ज्ञान का स्त्रोत होता है।

शोध कार्य के कारण किसी पूर्व स्थापित मान्यता या सिद्धान्त की अशुद्धियाँ दूर होती है।

शोध कार्य के कारण मानव में तार्किक सोच का विकास होता है। जिससे मानव के ज्ञान का परिष्करण होता है।

शोध के फलस्वरूप किसी नये सिद्धान्त या मान्यता का विकास होता है तथा इससे उस विषय पर पुनः शोध के विचार का जन्म होता है।

शोध मानव हेतु आजीविका का स्त्रोत भी है।

शोध के द्वारा नये सिद्धान्तों का सामान्यीकरण किया जाता है एवं बार - बार पुष्टि द्वारा किसी विषय के संबंध में सामान्य धारणा का विकास हो जाता है।

शोध के परिणाम सामाजिक कल्याण, ज्ञान - विज्ञान एवं आर्थिक व पर्यावरणीय नीतियाँ बनाने के लिए आधार प्रस्तुत करता है अतः शोध सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में प्रगति में योगदान देता है।

शोध कार्य से किसी विषय के विषय क्षेत्र का विस्तार होता है अतः यह विषय की प्रगति में भी सहायक है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 अध्याय

शोध समस्या की पहचान

शोध कार्य का आयोजन किसी समस्या के समाधान या प्रश्न का उत्तर ज्ञात करने के लिए किया जाता है तथा शोध की शुरुआत समस्या की पहचान से ही होती है। समस्या ही अनुसंधान की जननी है।

किसी शोध प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण चरण शोध समस्या की पहचान एवं प्रतिपादन ही होता है।

शोध समस्या के चयन के आधार –

शोध से संबंधित समस्या के चयन में यह ध्यान रखना चाहिए कि समस्या सामान्यत: ऐसी हो जिस पर पूर्व में कार्य नहीं किया गया हो या बहुत कम कार्य किया गया हो।

शोध समस्या समाजोपयगी होनी चाहिए।

शोध समस्या का शीर्षक किसी भी प्रकार के विरोध को उत्पन्न करने वाला नहीं होना चाहिए।

शोध समस्या की पहचान में शोधार्थी की रुचि का विशेष महत्व होता है। शोधार्थी को अपनी रुचि के अनुसार यह निश्चय करना होता है किस बिन्दु पर शोध कार्य किया जायेगा।

शोध समस्या के निर्धारण में संबंधित साहित्य का बड़ा योगदान होता है। साहित्य के गहन व आलोचनात्मक अध्ययन से ही शोध समस्या एवं प्रक्रिया स्पष्ट होती है।

शोध निदेशक की सुझ-बूझ व ज्ञान का प्रभाव शोध समस्या को पहचानने एवं शोध की सम्पूर्ण प्रक्रिया में उपयोगी व आवश्यक होता है।

शोधार्थी की जागरूकता का शोध समस्या की पहचान एवं शोधप्रक्रिया को पूर्ण करने में योगदान रहता है।

शोध कार्य एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है एक समस्या को हल करने के लिए शोध कार्य किया जाता है तथा इस शोध से नये प्रश्न व नई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है जिससे नये शोध की ओर ध्यान आकर्षित होता है।

वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप नई शोध समस्याओं की पहचान हो रही है।

पूर्व में किये गये शोध कार्यों के परिणामों की विसंगतियो से भी नई शोध समस्याओं के चयन का आधार मिलता है।

शोध समस्या की विशेषताएँ →

(i) शोध समस्या में नवीनता होनी चाहिए।

(ii) शोध समस्या संबंधित प्रकरण पर नया ज्ञान देने में कहाँ तक उपयोगी है उसकी उपयोगिता पर भी आधारित होनी चाहिए।

(iii) शोध समस्या शोधार्थी की रुचि के अनुसार होनी चाहिए।

(iv) शोध समस्या से संबंधित आवश्यक सामग्री व साधनों की उपलब्धता होनी चाहिए।

(v.) शोध समस्या ऐसी हो जिसके लिए सरलता से निर्देशन प्राप्त हो सके।

(vi) शोध समस्या के क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता का अनुभवी व सृजनात्मक होना आवश्यक है।

(vii) शोध समस्या का निर्धारण शोध के स्तर के अनुसार होना चाहिए।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

शोध समस्या के प्रकार –

आनुभविक – जब शोधकर्ता विभिन्न अध्ययनो से प्राप्त अनुभवो को व्यक्त करता है तो ऐसी शोध समस्याएँ आनुभविक कहलाती है।

विश्लेषणात्मक समस्याएँ – ये समस्याएँ वैज्ञानिक नहीं होती है। पूर्व में व्यक्त समस्याओं पर नये तर्क प्रस्तुत करती है।

सैद्धान्तिक समस्याएँ – जिन समस्याओं में सैद्धान्तिक प्रश्न शामिल होते है अर्थात् प्रचलित सिद्धान्तो में परिवर्तन व नये सिद्धान्तो की खोज करना होता है तो उन्हें सैद्धान्तिक समस्याएँ कहा जाता है।

व्यवहारात्मक समस्याएँ – जब शोध के परिणाम शोध को उपयोगी बनाने के क्षेत्र में होते है तो उन्हें व्यवहारिक समस्याएँ कहा जाता है

सह संबंधात्मक समस्याएँ – जिस अनुसंधान में दो चरो के बीच सह संबंध ढूढ़ने का प्रयास किया जाता है।

मानकीय / प्रासमिक (Normative) समस्याएँ – इन समस्याओं का समाधान उन प्रश्नों के रूप में होता है जो स्वीकृत या मान्य निर्णयों पर आधारित होते है।

सर्वेक्षण समस्याएँ – भौगोलिक शोध सामान्यत: सर्वेक्षण पर ही आधारित होते है।

ऐतिहासिक समस्याएं – ऐसी समस्याएं जिनका उद्देश्य विशेष अवधि में होने वाली घटनाओ का अध्ययन करना होता है।

प्रायोगिक समस्याएँ – शोध के निष्कर्ष एवं सुझाव भावी योजनाओं को प्रस्तुत करने वाले हो तो उन्हें प्रायोगिक समस्याएँ कहा जाता है।

शोध समस्या का सीमांकन –

अध्ययन क्षेत्र की सीमाएँ – शोध समस्या के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र का दायरा निश्चित करना चाहिए। सामान्यतः सीमित क्षेत्र को आधार बनाना चाहिए।

काल की सीमाएँ – शोध समस्या को देखकर किसी विशेष अवधि का ही अध्ययन करना चाहिए।

प्रतिदर्श का चयन – समय व धन के सन्दर्भ में उपयुक्त मात्रा में प्रतिदर्श लेने चाहिए।

चर – शोध समस्या के संदर्भ में अध्ययन हेतु सीमित चरों का चयन किया जाना चाहिए।

शोध विधि – आंकड़ों के विश्लेषण हेतु कुछ निश्चित व तर्कसंगत विधियों को ही आधार बनाया जाना चाहिए।

Unleash the topper in you

3 अध्याय

शोध उपागम

आगमनात्मक उपागम व निगमनात्मक उपागम
(Inductive Approaches and Deductive Approaches)

आगमनात्मक उपागम — इस उपागम में शोधकर्ता शोध कार्य कुछ आंकड़ो या उदाहरण के साथ शुरु करता है एवं उसके बाद आंकड़ो का विश्लेषण करते हुए सिद्धान्त का निर्माण या सामान्यीकरण करता है।

अर्थात् यह शोध उपागम उदाहरण से नियम की ओर या विशेष से सामान्य की ओर होता है।

यह तल से ऊपर की ओर (Bottom – up) विधी है।

यह शोध उपागम तब अपनाया जाता है जब किसी घटना या तथ्य के संबंध में पूर्व शोध बहुत कम हो, शोध प्रश्न अस्पष्ट हो, अप्रत्याशित परिणाम सामने आ रहे हो।

यह शोध लोचशील (flexible) होता है तथा नई सूचनाओं के लिए हमेशा खुला रहता है। क्योंकि शोधकर्ता अपनी परिकल्पना को आँकड़ो की खोज के साथ-साथ चाहे जैसे परिवर्तित कर सकता है।

यह वर्णनात्मक व गुणात्मक अवलोकन के विश्लेषण पर आधारित होता है जिसमें शोधकर्ता विशेष अवलोकन द्वारा सामान्य सिद्धान्त की ओर चलता है।

यह शोध कार्य विशिष्ट विश्लेषण से प्रतिरूप पहचान व सामान्य निष्कर्ष के क्रम में चलता है।

विशिष्ट विश्लेषण (अवलोकन) → प्रतिरूप पहचान → सामान्य निष्कर्ष
(Specific observation) → Pattern Recognization → General Conclusion

Unleash the topper in you

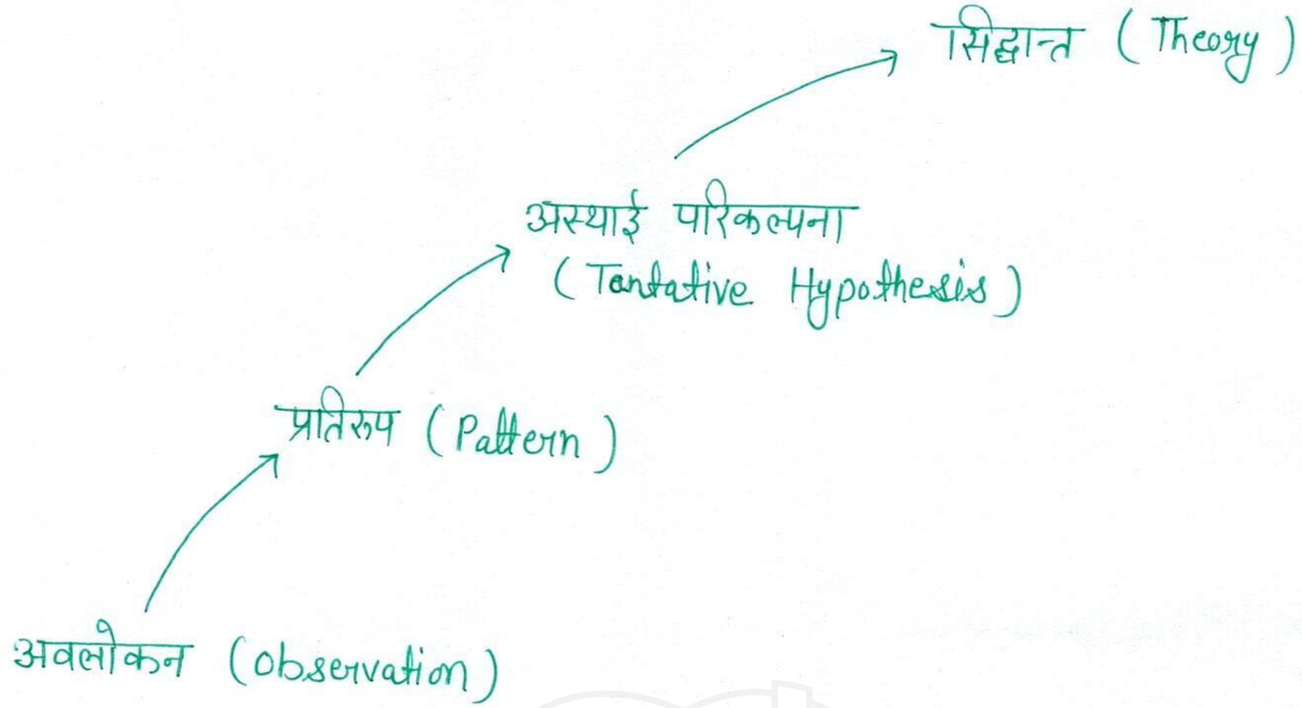

निगमनात्मक उपागम (Deductive Approach) — यह शोध कार्य तब किया जाता है जब उस विषय के सन्दर्भ में पूर्व में शोध हो चुके तथा उनके परिणामों की पुष्टि करने के लिए शोध किया जाता है।

इसमे शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य किसी सिद्धान्त या परिकल्पना के आधार पर शुरु किया जाता है तथा बाद में इस परिकल्पना या सिद्धान्त को अवलोकन व आँकड़ो के विश्लेषण से पुन: प्राप्त किया जाता है।

अर्थात् किसी सिद्धान्त या सामान्यीकरण को अवलोकन द्वारा जाचाँ जाता है।

अत: इसमे नियम से उदाहरण की ओर या सामान्य से विशेष की ओर या ऊपर से तल की ओर (Up to Bottom) क्रम को अपनाया जाता है।

यह शोध तब सही रहता है जब शोध प्रश्न स्पष्ट हो तथा वह किसी विशेष सिद्धान्त को सिद्ध करना चाहता हो या जिससे उद्देश्य सिद्ध होता हो।

Toppernotes
Unleash the topper in you

यह शोध अलोचशील होता है तथा संरचनात्मक होता है।

इसमें Research Design (शोध प्रारूप) व शोध विधि तंत्र निश्चित होता है।

यह किसी निश्चित उद्देश्य के साथ शुरू होता है तथा आंकड़ो के संग्रहण व विश्लेषण के कारण इसमें अधिक वस्तुनिष्ठता व सततता रहती है।

यह अधिक मात्रात्मक या सांख्यिकीय विश्लेषण है।

इसकी संरचना में निम्न चरण होते है :-

मूल सिद्धान्त → परिकल्पना निर्माण → आंकड़ो का संग्रहण → आंकड़ो का विश्लेषण → परिकल्पना सही / गलत

(General theory) → (Hypothesis Building) → (Data Collection) → (Data Analysis) → (Hypothesis ok / Reject)

सिद्धान्त (Theory)
→ परिकल्पना (Hypothesis)
→ अवलोकन (Observation)
→ पुष्टि (Confirmation)

Toppersnotes
Unleash the topper in you